



भारतीय वानिकी अनुसंधान  
एवं शिक्षा परिषद

# वानिकी

## समाचार

अनुक्रमणिका

विश्व पर्यावरण दिवस	01
भा.वा.अ.शि.प. सोसाइटी की वार्षिक आम सभा	01
महत्वपूर्ण अनुसंधान निष्कर्ष	02
कार्यशालाएं/वेबिनार/बैठकें	04
प्रशिक्षण कार्यक्रम	06
प्रकृति कार्यक्रम	06
परामर्शी	07
जागरूकता एवं प्रदर्शन कार्यक्रम	07
आकाशवाणी/दूरदर्शन के माध्यम से वानिकी को लोकप्रिय बनाना	07
प्रकाशन	08
विविध	08
मानव संसाधन समाचार	08

### भा.वा.अ.शि.प. सोसाइटी की 26<sup>वीं</sup> वार्षिक आम सभा

श्री प्रकाश जावड़ेकर जी, माननीय मंत्री, पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार तथा अध्यक्ष, भा.वा.अ.शि.प. सोसाइटी की अध्यक्षता में दिनांक 27 अप्रैल 2020 को वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से भा.वा.अ.शि.प. सोसाइटी की 26<sup>वीं</sup> वार्षिक आम सभा आयोजित हुई। बैठक में अन्य कार्यों के साथ-साथ, परिषद् के वार्षिक प्रतिवेदन 2018-19 को भी अंगीकृत किया गया।

की। इस अवसर पर वन आनुवंशिकी एवं वृक्ष प्रजनन संस्थान, कोयम्बटूर ने उच्च उत्पादक कैजुरिना कृन्तकों पर ऑनलाइन श्रृंखला, भाग- 1 आयोजित की। कार्यक्रम में 1327 प्रतिभागियों ने पंजीकरण कराया तथा 1031 ने सजीव प्रशिक्षण सत्र में भाग लिया। हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने इस अवसर पर "पारितंत्र सेवाएं एवं जलवायु परिवर्तन", "उत्तर पश्चिमी हिमालय क्षेत्र में औषधीय पादपों की भूमिका" तथा "वन पारितंत्र में कवक की भूमिका" पर वेबिनार आयोजित किया। वर्षा वन अनुसंधान संस्थान, जोरहाट ने इस अवसर पर वृक्षारोपण कार्यक्रम आयोजित किया तथा उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर ने विद्यालय के छात्रों के लिए वेबिनार आयोजित किया।

### विश्व पर्यावरण दिवस

भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद् के संस्थानों ने दिनांक 5 जून 2020 को विश्व पर्यावरण दिवस मनाया। इस अवसर पर पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय द्वारा ऑनलाइन वर्चुअल समारोह आयोजित किया गया जिसमें श्री प्रकाश जावड़ेकर, माननीय पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्री तथा श्री बाबूल सुप्रियो, माननीय पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन राज्य मंत्री ने पर्यावरण से संबंधित अपना संदेश दिया, कार्यक्रम में परिषद् के समस्त संस्थानों द्वारा भागीदारी की गई।

वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून ने केन्द्रीय विद्यालय तथा नवोदय विद्यालय संगठन के छात्रों के लिए ऑनलाइन चित्रकला एवं निबंध प्रतियोगिताएं आयोजित की। वन अनुसंधान संस्थान परिसर में स्वच्छता अभियान व सफाई अभियान भी आयोजित किए गए। शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर ने वाट्सएप के माध्यम से जैवविविधता संरक्षण में संस्थान की भूमिका पर ऑनलाइन वार्ता, प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता तथा "प्लास्टिक प्रदूषण" पर पोस्टर प्रतियोगिता आयोजित



वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून में विश्व पर्यावरण दिवस 2020 मनाया गया



वर्षा वन अनुसंधान संस्थान, जोरहाट में विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर वृक्षारोपण कार्यक्रम



## महत्वपूर्ण अनुसंधान निष्कर्ष

### वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून

- परियोजना "स्व-स्थाने पर्ण अर्बुद उत्पादन की सम्भाव्यताओं के अन्वेषण के लिए *पिस्तासिया इण्टीगेरिमा* का पिटिकाविज्ञान तथा पौधशाला स्थापना (डाबर इण्डिया प्रा.लि.)" के अंतर्गत गमलों में रोपित गेहूँ की जड़ों में पाले गए कौमार्यजनन की अंतिम पीढ़ी से वसंत सपंखों (सेक्सूपेर) का उद्भव हुआ। साहिया (चकराता) में इन सेक्सूपेर को *पिस्तासिया इण्टीगेरिमा* के वृक्षों पर निर्मुक्त किया जाना था परन्तु कोविड-19 महामारी के कारण लॉकडाउन होने से निर्मुक्त नहीं किया जा सका। परियोजना के अंतर्गत पंखविहीन कौमार्यजनन का आकारमितिय अध्ययन किया जा रहा है।
- विकासनगर, सेलाकुई तथा देहरादून के निकटवर्ती स्थानों से विभिन्न वानिकी वृक्षों यथा *डैल्लबर्जिया सिस्सू*, *फाइकस बेन्चालेनसिस*, *मोरस एल्बा*, *पोपुलस डेल्टोइडस*, *क्वर्कस ल्यूकोट्राइकोफोरा* तथा *टैक्टोना ग्राण्डिस* से कीट अण्डों के पच्चीस नमूने एकत्रित किए गए। एकत्रित अण्ड नमूनों से एक अण्ड परजीव्याभ का उद्भव हुआ जो कि *पोपुलस डेल्टोइडस* पर बग के अण्डों से टेरोमैलिड कुल की *सिलोसेरा* प्रजा. थी। विगत में एकत्रित स्वीपिंग नमूनों के श्रेणीकरण पश्चात छह अण्ड परजीव्याभों : *मेगाफ्राम्मा लॉगिक्लावाटा*, *गोनेटोसेरुस एजायटिकस*, *ओलिगोसिता गिलवस*, *इपोलिगोसिता* प्रजा., *प्रोसोलिगोसिता* प्रजा. तथा *ट्राइकोग्राम्मेटोडिए फ्यूमाटा* को प्रजाति स्तर तक चिह्नित किया गया।
- परियोजना "वन अनुसंधान संस्थान के राष्ट्रीय वन कीट संग्रह (NFIC) का डिजीटलीकरण एवं संवर्धन, चरण - II (सूक्ष्म कीट)" के अंतर्गत 424 कीट प्ररूपों को डिजीटलीकृत तथा इन प्ररूपों के लगभग 1680 छायाचित्र लिए गए। छायाचित्रों को Tiff, Jpeg तथा compressed प्ररूपों में भण्डारित किया गया। सत्यापन रिपोर्ट के आधार पर दराज 11 एवं 15 के 405 अनुक्रमों तथा दराज 15 से 29 तक के 807 अनुक्रमों के आंकड़ा-संचय अभिलेखों में संशोधन किए गए। दराज संख्या 54, ड़ार संख्या 2 में 80 प्रजातियों के अभिलेखों को डाटाबेस में प्रविष्ट किया गया।
- उच्च श्यानता (viscosity) के विलयनों को तैयार करने के लिए सिट्रिक अम्ल के उपयोग से ग्वार गम को क्रास-लिंक किया गया।
- एच.पी.एल.सी. के उपयोग द्वारा *इल्लीसियम ग्राफिथी* फलों से स्कीमिक अम्ल का मात्रात्मक विश्लेषण किया गया।
- परियोजना "दीर्घावधि अनुश्रवण द्वारा भारतीय वनों पर जलवायु संबंधित प्रभावों पर अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना (AICRP)" के अंतर्गत अप्रैल तथा मई 2020 माह के दौरान कीट परागणकों की स्थिति तथा मेजबान पादपों के साथ उनकी अंतःक्रिया के संबंध में मूलभूत अवधारणा को ज्ञात करने के लिए वन अनुसंधान परिसर के अंदर परागणकों का एक संदर्भ संग्रह किया गया। परिसर के अंदर अभिज्ञान किए गए मुख्य परागणक मधुमक्खी, भ्रमर, होवर फलाई तथा तितलियां हैं। विभिन्न प्रकार के वन्य शाकों तथा घासों के निकट बरं तथा भ्रमर पाए गए। परिसर के अंदर विभिन्न वनस्पतियों से कुल 31 प्रकार की तितलियों की प्रजातियां एकत्रित की गई तथा मुख्य मेजबान पादप *लैण्टाना कमारा*, मैक्सिकन डेविल एवं विभिन्न प्रकार की वन्य घास थे।
- विभिन्न वन उप-प्रकारों से संबद्ध तितलियों के आंकड़ा-संचय को अद्यतनीकृत किया गया तथा गढ़वाल के विगत रिकार्ड के लिए पूर्ण किया गया। क्षेत्र सर्वेक्षणों के दौरान, व्हाईट-रिंग्ड मीडो ब्राउन, *हायपोनेफेले देवेन्द्रा* (लेपीडोप्टेरा : निमफैलिडी) जो कि स्पीति हिमाचल प्रदेश; तिब्बत के समीपस्थ क्षेत्रों में पायी जाने वाली दुर्लभ एवं संरक्षित प्रजाति है तथा केवल एक बार 110 वर्ष पूर्व कुमाऊं में दर्ज की गई थी, के नमूने लिए गए तथा उत्तराखण्ड राज्य में गढ़वाल की भीतरी घाटियों में पहली बार रिपोर्ट की गई, इस प्रकार से राज्य में इसकी व्याप्ति की पुष्टि की गई।
- परियोजना "पश्चिम हिमालय ओक के नाशी-कीट एवं उनका नियंत्रण" के अंतर्गत पश्चिम हिमालय ओक के नाशी-कीटों पर आंकड़ा-संचय को अद्यतनीकृत किया गया तथा लेपीडोप्टेरा की 82 प्रजातियों के लिए पूर्ण किया गया। आंकड़े तथा कीट सामग्री के एकत्रण के लिए देववन, चकराता वन प्रभाग, जिला देहरादून, उत्तराखण्ड में क्षेत्र सर्वेक्षण किए गए। देववन आरक्षित वन, चकराता वन प्रभाग में खारसू ओक, *क्वर्कस सेमिकार्पिफोलिया* से सिरामबिसिड वेधक, *जायलोट्रेकस बेसिफ्यूलीजिनोसिस* के जीवविज्ञान पर प्रयोग करने के लिए इसका एकत्रण किया गया। वेधक का उद्भव, सहवास, अण्डे देने को दर्ज तथा इसके लार्वल परजीव्याभों को एकत्रित किया गया। लेपीडोप्टेरन निष्पत्रकों की 2 प्रजातियों के जीवन चक्र को पूर्ण किया गया।
- परियोजना "पश्चिम हिमालय ओक के नाशी-कीट एवं उनका नियंत्रण" के अंतर्गत उत्तराखण्ड के कुमाऊं क्षेत्र में *क्वर्कस लेनाटा* की नवोदित टहनियों को संक्रमित करते *गेरेल्ला रूफिसिरा* (हेम्पसन) को पहली बार रिपोर्ट किया गया। पश्चिमी हिमालय ओक के आंकड़ा-संचय को लेपीडोप्टेरा की 40 प्रजातियों के लिए अद्यतनीकृत किया गया। देववन आरक्षित वन, चकराता से विगत में लाए गए खारसू ओक, *क्वर्कस सेमिकार्पिफोलिया* के कुन्दों पर सिरामबिसिड वेधक तथा थानो रेंज, जिला देहरादून के देवली ग्राम से बन ओक, *क्यू. ल्यूकोट्राइकोफोरा* के कुन्दों पर

सिरामबिसिड वेधक, एफ्रोडिसियम हार्डविकिएनम, जायलोट्रेकस बेसिफ्यूलीजिनोसिस के जीवविज्ञान पर जीवनचक्र अध्ययनों के लिए प्रयोग प्रयोगशाला में जारी रहे।

- परियोजना "उत्तराखण्ड में विभिन्न वन प्रकारों/उप-प्रकारों से संबद्ध तितलियां" के अंतर्गत तितलियों के नमूने लेने के लिए बड़कोट-गोलतप्पड़ रेंज, जिला देहरादून के नम शिवालिक साल वनों; टिहरी गढ़वाल में रोतू-की-बेली और देवलसारी में मोरु ओक वनों एवं नम देवदार वनों तथा बेनोग वन्य जीव अभयारण्य मसूरी में बन ओक वनों में वन क्षेत्रों में क्षेत्र सर्वेक्षण किए गए। पूर्व मानसून ऋतु के दौरान 98 प्रजातियों के नमूने लिए गए जिसमें परियोजना आंकड़ा-संचय में 4 नवीन परिवर्धन सम्मिलित हैं जबकि असामान्य एवं दुर्लभ तितलियों के 15 प्रतिदर्श तथा दो पादप भी एकत्रित किए गए। पेपिलिओनिडी कुल की 26 प्रजातियों का उनके सामयिक, वितरण तथा उत्तराखण्ड में संबद्ध वन प्रकारों के चित्रण को दर्शाने के लिए भौगोलिक सूचना प्रणाली आधारित कृत्रिम रंग के सम्मिश्र मानचित्र सृजित किए गए। तितलियों के उप-कुल सेटायरिडी के लेथे वंश के 4 सजातीय प्रजातियों के प्रजननांगों को भी विच्छेदित किया गया तथा नर प्रतिदर्शों की तुलना एवं पुष्टीकरण हेतु स्लाइड तैयार किए गए।
- परियोजना "साल अंतःकाष्ठ वेधक, होप्लोसिरामबिक्स स्पिनीकोर्निस (कोलियोप्टेरा : सिरामबिसिडी) के प्रबंधन हेतु सेमिओकेमिकल्स पर अध्ययन" के अंतर्गत वन अनुसंधान संस्थान इस्टेट के आरक्षित वन में कैनाल ब्लाक के कम्पार्टमेंट सं. 25 में साल वेधक की घटना दर्ज की गई। दून घाटी यथा आशारोड़ी, थानो, लच्छीवाला, ऋषिकेश, बड़कोट, झाझरा, तिमली तथा मल्हन में विभिन्न वन रेंजों में साल अंतःकाष्ठ वेधक की घटना तथा वनों के सामान्य स्वास्थ्य पर प्रेक्षण दर्ज किए गए। थानो, झाझरा तथा धारूट (तिमली) में साल वनों से 21 वयस्कों को व्यवहार अध्ययनों के लिए एकत्रित किया गया।
- पाईनस रॉक्सबर्घाई की सूचिकाओं से रेशा निष्कर्षण के लिए प्रयोग किए गए। कच्ची सामग्री (सूचिकाओं) से प्राप्त रेशे की मात्रा सुसाध्य एवं हरित प्रक्रियाओं द्वारा 40-45% तक प्राप्त की गई, जिसकी वृहद स्तर पर पुनरावृत्ति की जा सकती है।
- पिण्डारी (चमोली) तथा दर्मा घाटी (पिथौरागढ़) के वनों में पाई जाने वाली बेटुला यूटिलिस की दो वृक्ष आबादियों के 55 अनुक्रमों के छाल में कुल ट्रिटरपेनाइड अंतर्वस्तुओं का निर्धारण किया गया।
- चुनिंदा संततियों से नीम के बीजों में लिमोनोइड घटकों के मात्रात्मक आकलन से संबंधित आंकड़ों का विश्लेषण तथा व्याख्या की गई।

### वन आनुवंशिकी एवं वृक्ष प्रजनन संस्थान, कोयम्बटूर

- टेरोकार्पस सैण्टालिनस (रक्त चंदन) का वानस्पतिक प्रवर्धन अत्याधिक कठिन कार्य है क्योंकि यह धीमी गति से बढ़ने वाली प्रजाति है जोकि सामान्यतः बीजों के माध्यम से प्रवर्धित होती

हैं, जो 80-100 वर्ष की आयु में 70 cm परिधि का कटाई युक्त आकार प्राप्त करता है। तनों की काट के उपयोग से रक्त चंदन के लिए वानस्पतिक प्रवर्धन की तकनीक विकसित की गई। रक्त चंदन की शाखाओं के अंतस्थ कोनों से एकत्रित विभिन्न आकारों की तना काटों (< 3 mm परिधि से लेकर 1 cm : 7 cm ऊंचाई) को पॉली टनल में रूट ट्रेनरों में मानक उपचार पश्चात 60 दिनों में उगाया गया। नर्म काष्ठ काटों (< 3 mm) से 55.2% जड़न तथा अंकुरण को मानकीकृत किया गया। यह विधि रक्त चंदन के वृहद प्रवर्धन के लिए सफल वानस्पतिक प्रवर्धन तकनीक है।

- विज्ञान के लिए नवीन लंबे सींग वाली टिड्डे की तीन प्रजातियों (आर्थोप्टेरा : टेटीगोनाइडी : फेनेरोप्टेरिनी) यथा ट्राइगोनोकोरीफा थेनेन्नसिस, टी. पोन्मैनिएइ तथा टी. दिव्येइ को कोयम्बटूर, जवाडु हिल्स तथा थेनी से एकत्रित किया गया, इन्हें वर्णित कर जूबैंक में जमा किया गया और जूटैक्सा, न्यूजीलैंड में प्रकाशित किया गया।

### शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर

- जयपुर तथा माउण्ट आबू के राजभवनों की जैवविविधता का आकलन यह इंगित करता है कि जयपुर क्षेत्र में सबसे बहुल वृक्ष प्रजाति पॉलीएलिया लॉगिफोलिया प्रति वर्ग मीटर क्षेत्र में 2.1 वृक्षों तथा बेसल 676.7 cm<sup>2</sup> के साथ है। माउण्ट आबू में, मैल्लोटस फिलीप्पेनसिस उच्चतम महत्वपूर्ण मान सूचकांक (आई.वी.आई.) तथा 9 प्रखण्डों में प्रति 100 वर्ग मी. में 0.7 के औसत घनत्व और 70.5 cm<sup>2</sup> के बेसल क्षेत्रफल के साथ वर्चस्व रखता है। शाकों के मध्य, जयपुर में बॉयूगनविलिया ग्लाब्रा तत्पश्चात टेकोमा स्टान्स बहुल हैं, जबकि माउण्ट आबू में लैण्टाना कैमारा तत्पश्चात डैण्ड्रोकेलामस स्ट्रीक्टस बहुल हैं। जयपुर में सायनोडॉन डेक्टायलोन तत्पश्चात फायल्लेनथस एमेरुस शाक प्रजातियों में तथा माउण्ट आबू में एपलूडा म्यूटिका तत्पश्चात ओपलिसमेनूस बर्मात्रि बहुल हैं। जयपुर में न्यूनतम बहुल वृक्ष प्रजातियां फाइकस बेन्चालेन्सिस किस्म किस्नेई तथा माउण्ट आबू में एक प्रखण्ड में न्यूनतम आई.वी.आई. मान के साथ माइकेलिया चैम्पका, क्राटिवा एडेनसोनाई उप-प्रजाति ओडोरा, टैमेरिण्डस इण्डिका, इरिओबोत्राया जेपोनिका, बौहीनिया वेरिएगाटा प्रेक्षित की गई।
- इंदिरा गाँधी नहर रोपणियों में, ई. कैमाल्डुलैन्सिस के लिए प्रति वृक्ष औसत शुष्क बायोमास 749.92±599.15 kg तथा वेशिलिया टॉर्टिलिस के लिए 327.47±242.55 kg था। ई. कैमाल्डुलैन्सिस में तने, शाखाओं तथा पत्तियों में बायोमास का विभाजन 68.36%, 29.04% तथा 2.59% तथा वी. टॉर्टिलिस में क्रमशः 28.08%, 67.50% तथा 4.42% था। कुल बायोमास में वृद्धि से ई. कैमाल्डुलैन्सिस के तने में तथा वेशिलिया टॉर्टिलिस की शाखाओं में उच्च बायोमास आवंटन में सहायता हुई। दोनों प्रजातियों के कुल शुष्क बायोमास उनकी परिधि में आवक्ष ऊंचाई पर एक पावर समीकरण द्वारा महत्वपूर्ण रूप से संबंधित किए गए।

## कार्यशालाएं/वेबिनार/बैठकें

क्र. सं.	विषय	समयावधि	लाभार्थी
<b>वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून</b>			
1.	यमुना जीर्णोद्धार के लिए विस्तृत परियोजना रिपोर्ट यमुना पर द्वितीय परामर्शी बैठक	10, 11 तथा 22 जून 2020	उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश तथा राजस्थान के राज्य वन विभाग
<b>वर्षा वन अनुसंधान संस्थान, जोरहाट</b>			
2.	त्रिपुरा के मुण्डा तथा संथाल समुदायों द्वारा औषधीय पादपों एवं जड़ी-बूटियों का उपयोजन	10 जून 2020	पारंपरिक आरोग्यक (वैद्य), वरिष्ठ नागरिक तथा पंचायत के पदाधिकारी
<b>हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला</b>			
3.	वानिकी हस्तक्षेपों के माध्यम से व्यास, चिनाब, रावी तथा सतलुज नदियों के जीर्णोद्धार हेतु विस्तृत परियोजना रिपोर्ट को अंतिम रूप दिए जाने के लिए अंतिम परामर्शी बैठक	26 जून 2020	प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं प्रमुख वन बल; प्रधान मुख्य वन संरक्षक (वित्त), मुख्य वन संरक्षक, वन संरक्षक, उप वन अधिकारी, राज्य वन विभाग, निदेशक तथा नोडल अधिकारी
4.	भारतीय हिमालय क्षेत्र में जलवायु परिवर्तन- वन पारितंत्र पर प्रभाव तथा वानिकी अनुसंधान में इसके निहितार्थ	30 जून 2020	वैज्ञानिक, उप वन संरक्षक, तकनीकी अधिकारी तथा अन्य अनुसंधान कर्मचारी



त्रिपुरा के मुण्डा तथा संथाल समुदायों द्वारा औषधीय पादपों एवं जड़ी-बूटियों के उपयोजन पर कार्यशाला



भारतीय हिमालय क्षेत्र में जलवायु परिवर्तन- वन पारितंत्र पर प्रभाव तथा वानिकी अनुसंधान में इसके निहितार्थ पर सेगोष्ठी

## शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर

- |    |   |             |                        |
|----|---|-------------|------------------------|
| 5. | बागवानी फसलों के रूप में खेजरी तथा लसोड़ा का समुपयोजन | 26 जून 2020 | वैज्ञानिक तथा कर्मचारी |
|----|---|-------------|------------------------|

## उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर

- |    |                               |             |  |
|----|-------------------------------|-------------|--|
| 6. | कृषिवानिकी में मूल्य श्रृंखला | 29 जून 2020 | उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर तथा वन अनुसंधान केन्द्र— कौशल विकास, छिंदवाड़ा से प्रतिभागी |
|----|-------------------------------|-------------|--|



कृषिवानिकी में मूल्य श्रृंखला पर वेबिनार

## वन उत्पादकता संस्थान, राँची

- |    |   |             |                      |
|----|---|-------------|----------------------|
| 7. | परियोजना “झारखण्ड में दलमा वन्यजीव अभयारण्य तथा बेतला राष्ट्रीय उद्यान में मृदा कार्बन स्टॉक का आकलन” पर परियोजना मूल्यांकन समिति की बैठक | 12 जून 2020 | अधिकारी तथा कर्मचारी |
| 8. | वनों का महत्व तथा जलवायु परिवर्तन में इनकी प्रासंगिकता  | 16 जून 2020 | अधिकारी तथा कर्मचारी |
| 9. | नागरिकों के मौलिक अधिकार  | 29 जून 2020 | अधिकारी तथा कर्मचारी |

## वन जैवविविधता संस्थान, हैदराबाद

- |     |            |            |                      |
|-----|------------|------------|----------------------|
| 10. | टिड्डी कीट | 5 जून 2020 | अधिकारी तथा कर्मचारी |
|-----|------------|------------|----------------------|

## प्रशिक्षण कार्यक्रम

क्र. सं.	विषय	समयावधि	लाभार्थी
<b>वर्षा वन अनुसंधान संस्थान, जोरहाट</b>			
1.	बाँस रोपणियों को उगाना	19 मई 2020	पौधशाला उत्पादक
2.	कृषकों का प्रशिक्षण	26 मई 2020	कृषक



राष्ट्रीय बाँस मिशन के अंतर्गत नलचर, त्रिपुरा में कृषकों का प्रशिक्षण

## प्रकृति कार्यक्रम

- भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद् के "प्रकृति" कार्यक्रम के अंतर्गत वन आनुवंशिकी एवं वृक्ष प्रजनन संस्थान, कोयम्बटूर द्वारा विद्यालय तथा महाविद्यालय के छात्रों के लिए विश्व पर्यावरण दिवस 2020 की विषय-वस्तु के अनुरूप "ऑनलाइन ज्ञान श्रृंखला – अपने पर्यावरण का अभिज्ञान" आयोजित की गई। विषय निम्नांकित हैं :
  - अभिज्ञ टिड्डियों के बारे में तथ्य – सृष्टि से समाधान
  - अपने आसपास की जैवविविधता को जानें।
  - सभी सूक्ष्मजीव हानिकारक नहीं हैं।
- ऑनलाइन ज्ञान श्रृंखला में जी.डी. मैट्रिकुलेशन एण्ड हायर सेकेण्ड्री स्कूल, कोयम्बटूर से 43 छात्रों ने प्रतिभाग किया।



अपने पर्यावरण के अभिज्ञान पर ऑनलाइन ज्ञान श्रृंखला

## परामर्शी

टिहरी हाइड्रो डेवलपमेंट कार्पोरेशन इंडिया लि.; हिमाचल प्रदेश पावर कार्पोरेशन लि.; कर्नाटक स्टेट ऑफिशियल एथोरिटी; प.व.ज.प.मं., भारत सरकार, नई दिल्ली; कोल इंडिया लिमिटेड, कोलकाता; एन.टी.पी.सी. लि., नोएडा; एन.एम.डी.सी.लि.,

हैदराबाद; सिंगरेनी कोल्लिएरिज कम्पनी लि., कोठागुडेम; छत्तीसगढ़ वन विभाग, रायपुर, वन एवं पर्यावरण विभाग, भुवनेश्वर द्वारा प्रदत्त दस परामर्शी परियोजनाओं पर भा.वा.अ.शि.प. वर्तमान में कार्य कर रहा है।

## जागरूकता एवं प्रदर्शन कार्यक्रम

- वन अनुसंधान केन्द्र : आजीविका विस्तार, अगरतला ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से कोविड-19 के संबंध में सामाजिक दूरी अभियान पर एक दिवसीय जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया। जागरूकता कार्यक्रम को दिनांक 17 अप्रैल 2020 को भारतीय जनजातीय सहकारी विपणन विकास परिसंघ (ट्राईफैड) तथा त्रिपुरा रिहैबिलिटेशन प्लांटेशन कार्पोरेशन लिमिटेड की सहभागिता से आयोजित

किया गया, कार्यक्रम से जनजातीय स्वयं सहायता समूह के 57 सदस्य लाभान्वित हुए।

- वन अनुसंधान केन्द्र : आजीविका विस्तार, अगरतला ने दिनांक 25 मई 2020 को "बाँस के बीजों के लिए अंकुरण क्यारियां तैयार करना" पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया। कार्यक्रम में 5 बाँस कृषकों ने प्रतिभाग किया।



बाँस के बीजों के लिए अंकुरण क्यारियां तैयार करने पर प्रशिक्षण

## आकाशवाणी / दूरदर्शन के माध्यम से वानिकी को लोकप्रिय बनाना

कार्यक्रम विषय	चैनल	दिनांक
<b>वन आनुवंशिकी एवं वृक्ष प्रजनन संस्थान, कोयम्बटूर</b>		
टिड्डी कीट	दीनामलार	27 मई 2020
	पुथिया थलाईमुराई में न्यूज 360	28 मई 2020
<b>शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर</b>		
जैवविविधता दिवस	आकाशवाणी, जोधपुर	22 मई 2020

## प्रकाशन

आर. राजा ऋषि तथा आर. सुन्दरराज द्वारा रचित "महाराष्ट्र के मैंग्रोव्स के महत्वपूर्ण नाशी-कीट तथा उनका प्रबंधन" (सं. का.वि.प्रौ. सं./18/2020 – 17 पृ.) पर तकनीकी बुलेटिन का विमोचन किया गया।

## विविध

संस्थान	विशेष दिन/विषय-वस्तु	समयावधि
वन आनुवंशिकी एवं वृक्ष प्रजनन संस्थान, कोयम्बटूर	पृथ्वी दिवस	22 अप्रैल 2020
भा.वा.अ.शि.प. संस्थान	अंतरराष्ट्रीय जैवविविधता दिवस	22 मई 2020
	अंतरराष्ट्रीय योग दिवस	21 जून 2020



हि.व.अ.सं., शिमला ने अंतरराष्ट्रीय जैवविविधता दिवस मनाया



व.व.अ.सं., जोरहाट में अंतरराष्ट्रीय जैवविविधता दिवस के अवसर पर बाँस के पौधों को रोपित किया गया

## मानव संसाधन समाचार

### नियुक्ति

**अधिकारी का नाम**  
डॉ. वी.एस. सेन्थिल कुमार, भा.व.से., सहायक महानिदेशक (शिक्षा एवं भर्ती बोर्ड), भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद

**तिथि**  
11.06.2020

### सेवानिवृत्ति

**अधिकारी का नाम**  
डॉ. वी.पी. तिवारी, वैज्ञानिक – 'जी', काष्ठ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, बेंगलुरु

**तिथि**  
31.05.2020

डॉ. किशन कुमार वी.एस., वैज्ञानिक – 'जी', वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून

**तिथि**  
31.05.2020

श्री एच.सी. सिन्धुवीरेन्द्रा, वैज्ञानिक – 'सी', काष्ठ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, बेंगलुरु

**तिथि**  
31.05.2020

डॉ. उत्तम कुमार तोमर, वैज्ञानिक – 'जी', शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर

**तिथि**  
30.06.2020

डॉ. मृदुला नेगी, वैज्ञानिक – 'ई', वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून

**तिथि**  
30.06.2020

श्री आई.एल. पाछे, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी, उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर

### संरक्षक:

श्री अरुण सिंह रावत, महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प., देहरादून

### संपादक मंडल:

डॉ. सुधीर कुमार, उप महानिदेशक (विस्तार), अध्यक्ष  
डॉ. ए.के. पाण्डेय, सहायक महानिदेशक (मीडिया एवं विस्तार), मानद सम्पादक  
श्री रमाकान्त मिश्र, मुख्य तकनीकी अधिकारी, (मीडिया एवं विस्तार प्रभाग), सदस्य

### प्रत्याख्यान

- केवल निजी रूप से प्रसारण करने हेतु।
- वानिकी समाचार में, प्रकाशित सामग्री, संपादक मंडल के विचारों को अनिवार्यतः प्रतिबिंबित नहीं करती है।
- यहाँ प्रकाशित सूचना के लिए किसी भी प्रकार के नुकसान की भरपाई के लिए भा.वा.अ.शि.प. उत्तरदायी नहीं होगा।